Established in 2008

"बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ"

ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर, भारत

NAAC Accredited | UGC Approved | Recognized by Statutory Councils

यशपाल शर्मा एवं भीष्म साहनी की कहानियों में नारी चरित्र का तुलनात्मक अध्ययन

शोधार्थी

अनिता खंडेलवाल

एनरोलमेन्ट नं.

JVR-I/22/10065

शोध निर्देशक

डॉ. निरुपमा हर्षवर्धन

मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विभाग

शिक्षा एवं कार्यप्रणाली संकाय

हिन्दी

में

पीएच.डी.

उपाधि हेतु शोध प्रस्तावना

Estd. in 2008

''बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ''

ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर, भारत

NAAC Accredited | UGC Approved | Recognized by Statutory Councils

यशपाल शर्मा एवं भीष्म साहनी की कहानियों में नारी चरित्र का तुलनात्मक अध्ययन

शोधार्थी

अनिता खंडेलवाल

एनरोलमेन्ट नं.

JVR-I/22/10065

शोध निर्देशक

डॉ. निरुपमा हर्षवर्धन

मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विभाग

शिक्षा एवं कार्यप्रणाली संकाय

हिन्दी

में

पीएच.डी.

उपाधि हेतु शोध प्रस्तावना

Jayoti Vidyapeeth Women's University
Estd. in 2008
''बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ''

यशपाल शर्मा और भीष्म साहनी की कहानियों में नारी चरित्र का तुलनात्मक अध्ययन

प्राक्कथन

मेरा नाम अनिता खंडेलवाल है, मैंने राजस्थान विश्वविद्यालय से कला संकाय में स्नातक किया। क्योंकि हिंदी में मेरी बाल्यकाल से ही रुचि थी, अतः मैंने हिंदी में स्नातकोत्तर करने का निर्णय लिया एवं एम.ए. हिंदी प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण किया। इसी क्रम में, अब मैं ज्योतिविद्यापीठ यूनिवर्सिटी, जयपुर (राजस्थान) से हिंदी में पीएच.डी. हेतु शोध कर रही हूं।

मेरे शोध का विषय यशपाल शर्मा एवं भीष्म साहनी की कहानियों में नारी चरित्र का तुलनात्मक अध्ययन है। कथा साहित्य की ओर मेरा रुझान बाल्यकाल से ही रहा है, मेरा बाल्यकाल नानाजी, दादी और मेरी मां से कथा कहानियां सुनते हुए बीता। कहानियों में जो शिल्प और संवेदना होती थी वह मेरे मन को छू लिया करती थी, कालांतर में हिंदी साहित्य को पढ़ने में मेरी रुचि बढ़ती गई और मुझे कई प्रसिद्ध कहानीकारों जैसे कि मनु भंडारी, प्रेमचंद, महादेवी वर्मा, फणीश्वर नाथ रेनू आदि की कहानियां पढ़ने का सुअवसर प्राप्त हुआ। यशपाल शर्मा और भीष्म साहनी की कहानियों ने मेरे अंतर्मन पर गहरा प्रभाव छोड़ा, उन्होंने नारी के अतीत की स्थिति, वर्तमान की स्थिति एवं नारी के मन के अंतर्द्वद और उनकी समस्याओं को बड़ी सरलता एवं सहजता से उन कहानियों में लिखा जो मेरे लिए आकर्षण का केंद्र रहा।

इसके पश्चात मैंने हिंदी में एम.ए. करने का निश्चय किया इस दौर में मुझे यशपाल शर्मा के साहित्य को पढ़ने का मौका मिला साथ ही साथ भीष्म साहनी की कहानियां भी पढ़ने का सौभाग्य, मेरे मित्र द्वारा उपहार स्वरूप दी गई पुस्तक – मेरी प्रिय कहानियाँ– से प्राप्त हुआ।

जिससे मेरा इन लेखकों की कहानियां के प्रति रुझान बढ़ने लगा और मैंने उनकी कहानियों की पुस्तकें लाइब्रेरी ऑनलाइन सब जगह से पढ़ने के लिए प्रयासरत रही। यशपाल शर्मा और

भीष्म साहनी ने अपने साहित्य में जिस प्रकार नारी चरित्र का वर्णन किया उससे मुझे शोध की प्रेरणा मिली।

मैंने अपने शोध मार्गदर्शक डॉक्टर आनंद राय के साथ विचार करके अपनी शोध के विषय का रूपरेखा तैयार की इसमें मैंने तुलनात्मक अध्ययन करने के लिए अपने विषय को छह अध्याय में बांटा इन अध्ययन में तुलनात्मक अध्ययन की भूमिका के साथ निष्कर्ष के साथ शोध कार्य को समाप्त किया है।

यशपाल शर्मा और भीष्म साहनी की कहानियों का मेरे मन पर बहुत गहरा प्रभाव है मैं आशा करती हूं कि मैं उनकी कहानियों का गहन अध्ययन करके अपनी शोध को न्यायपूर्ण तरीके से संपन्न कर सकूं।

गुरु की कृपा के अभाव में कुछ भी संभव नहीं है, वैसे भी कहा गया है,

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः,
गुरुः साक्षात्परब्रह्म तस्मैश्री गुरवेनमः।।

गुरु की महत्ता के कारण गुरु को ईश्वर से भी बड़ा स्थान दिया गया है। गुरु को ब्रह्मा, विष्णु, महेश के रूप में स्वीकार किया गया है। गुरु के मार्गदर्शन के अभाव में शिष्य को कुछ भी प्राप्त करना कदापि आसान नहीं होगा। उसी प्रकार मेरे इस शोध कार्य में मेरे मार्गदर्शक सुपरवाइजर डॉक्टर आनंद राय सर हैं, जो कि मेरी इस शोध में सहायता कर रहे हैं। वे अपने ज्ञान, अनुभव और स्नेह पूर्ण व्यवहार के द्वारा मुझे शोध पूर्ण करने में प्रोत्साहित कर रहे हैं।

आशा करती हूं की ईश्वर की कृपा और मेरे सुपरवाइजर डॉक्टर आनंद राय की छत्रछाया में यह शोध का कार्य सफलतापूर्वक पूर्ण कर सकूंगी। जिस प्रकार कबीर दास जी ने कहा है,

गुरु कुम्हार शिष्य कुम्भ है गढ़ि गढ़ि काढ़ेखोट,
अन्तर हाथ सहाय दै बाहर बाहै चोट।।

उसी प्रकार मेरे सुपरवाइजर डॉक्टर आनंद राय द्वारा मुझे समय–समय पर मार्गदर्शन प्राप्त होता रहेगा।

मेरी इस यात्रा में मेरे माता–पिता के आशीर्वाद के साथ मेरे पति का भी योगदान महत्वपूर्ण है, उन्होंने मुझे गृहस्थी की जिम्मेदारियों में सहायता करते हुए पढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया और मेरे शोध को पूर्ण करने के लिए मार्ग प्रशस्त किया।

शोध प्रस्तावना

मेरी शोध का विषय यशपाल शर्मा और भीष्म साहनी की कहानियों में नारी चरित्र का तुलनात्मक अध्ययन एक महत्वपूर्ण विषय है इसमें दोनों साहित्यकारों ने अपने–अपने कालखंड में नारी की स्थिति का चित्रण किया है। उन्होंने नारी का देश की आजादी से पहले और बाद के समय में सामाजिक धार्मिक राजनीति क कारणों से जो परिवर्तन आया है उसको सटीक रूप से दर्शाया है एवं इन दोनों प्रतिभा के धनी साहित्यकारों ने अपनी कहानियों में नारी को एक विशिष्ट रूप में प्रस्तुत किया है और मेरा उद्देश्य पाठकों का ध्यान इसी ओर आकर्षित करने का है।

स्त्री के विषय में महिला लेखिकाओं ने भी कहानियां लिखी है एवं महिला होने के नाते उनके लिए किसी भी स्त्री का मन टटोलना आसान था, किंतु स्वतंत्रता संग्राम के कालखंड में इन दो महान लेखकों द्वारा नारी के विषय एवं उनकी सामाजिक, मानसिक स्थिति के बारे में इतना विस्तारपूर्वक निर्भीक वर्णन किया।

नारी के उन विषयों पर न केवल उस काल में अपितु इस समय भी हमें चिंतन एवं मनन करना चाहिए। मेरे शोध में, यशपाल शर्मा और भीष्म साहनी के द्वारा नारी के पात्रों का विभिन्न परिस्थितियों में अलग–अलग रूपों पर जो ध्यान आकर्षित किया गया है, उसी को तुलनात्मक रूप में पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करना चाहती हूं।

शोध के प्रति रुचि यशपाल शर्मा और भीष्म साहनी, भारतीय साहित्य के दो प्रमुख चरित्र हैं जिन्होंने अपनी कहानियों में महिला पात्रों को महत्वपूर्ण स्थान दिया है इनकी कहानियां हालांकि अपने अद्वितीय शैलियों और व्यक्तिगत दृष्टिकोण की उपस्थिति से प्रभावित है फिर भी महिला पात्रों की ओर इनका दृष्टि कोण मिलता–जुलता है, दोनों लेखकों द्वारा अपनी महिला प्रमुखों की कल्पना और प्रस्तुतीकरण में एक आकर्षक विभाजन का अस्तित्व है। इस अध्ययन का उद्देश्य यशपाल शर्मा और भीष्म साहनी द्वारा लिखी गई कहानियों में महिला पात्रों का तुलनात्मक विश्लेषण करना है, जिसमें उनके चरित्रांकन, उनकी भूमिका और उनके समय के सामाजिक–सांस्कृतिक परिवेश की प्रतिबिंबित करने पर जोर दिया गया है। इनकी कहानियों में सामाजिक समस्या बाल विवाह की बुराई और उसकी क्रूरता है, और समाज और उसमें रहने वाले पुरुषों का अंधापन है, जिन्हें यह अनुभूति नहीं है कि परंपरा कितनी क्रूर हो सकती है।

आज के परिपेक्ष में इन नारी पात्रों का अगर हम बारीकी से परीक्षण करते हैं तो यह बोध होता है कि नारी की परिस्थितियों में कोई विशेष या महत्वपूर्ण परिवर्तन देखने को नहीं मिलता अतः अतः इन पात्रों लेखकों द्वारा रचित कहानियों की विवेचना द्वारा मैं साहित्य में अपना योगदान करना चाहती हूं।

कहानी का उद्भव एवं विकास की पृष्ठभूमि मनुष्य प्राचीन काल से ही कहानी कहता और सुनता आ रहा है। कहानी सुनने का यह चलन बहुत पुराना है। पहले के राजा–महाराजा अपने मनोरंजन के लिए कहानी सुना करते थे। अपने प्राचीन ग्रंथ उपनिषद में भी बहुत सी कहानियां हैं। कहानियां विश्व की सभी भाषाओं में लिखी जाती थी और कहानियों के माध्यम से हम अपने देश तथा अन्य देशों के सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक जीवन और लोगों के रहन–सहन, रीति –रिवाज आदि के बारे में जान सकते हैं। कहानी की मूल प्रेरणा जीवन से ही मिलती है। कहानी पूर्णतया कल्पना की उपज नहीं होती, इसके लिए लेखक कहीं ना कहीं कोई जान पहचान वाले पात्र के इर्द–गिर्द ही कहानी लिखता है। लेखक की कहानी का आधार उसके व्यक्तिगत जीवन के आसपास के वातावरण से प्रभावित होता है। अर्थात लेखक अपने जीवन से ही अपनी कहानी की कच्ची सामग्री एकत्रित करता है। प्रेमचंद के पश्चात हिंदी कहानी का विकास और अधिक तेजी से हुआ।

प्रेमचंद और जयशंकर प्रसाद के बाद दो प्रकार की हिंदी कहानियों का निर्माण होने लगा, पहली प्रगति वादी कहानियां और दूसरी मनोवैज्ञानिक कहानियां। 1936 में प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना हुई इसमें कई लेखक जुड़े। उन सभी लेखकों ने इन कहानियों को प्रगतिशील कहानियों का नाम दिया। प्रगतिशील कहानीकारों में यशपाल शर्मा, उपेंद्र नाथ पांडे, बेचन शर्मा (उग्र), विष्णु प्रभाकर, अमृतलाल नागर आदि के नाम आते हैं। प्रेमचंद को केंद्र में रखकर कहानी के विकास को तीन कालों में विभाजित कर सकते हैं–

- पूर्व प्रेमचंद युगीन कहानियां (सन् 1870 – 1915 ई.)
- प्रेमचंद जी की कहानियां (सन् 1916 – 1935 ई.)
- प्रेमचंदोत्तर युगीन कहानियां (सन् 1936 – 1955 ई.)

प्रेमचंदोत्तर काल में कहानी की परंपरा को नया आयाम देने के लिए यशपाल जी का एक महत्वपूर्ण स्थान है। प्रेमचंद के पश्चात नए कहानीकारों ने परंपरा से हटकर कहानी का सृजन किया जो नई कहानी के रूप में पहचान बनाने लगी। इसमें विशेष तौर पर भीष्म साहनी जी ने प्रेमचंद द्वारा आरम्भ की गई यथार्थवादी परंपरा, जो टूट रही थी, उन खत्म होती परंपराओं को उन्होंने एक प्रकार से पुनः जागृत किया।

कहानी की परिभाषाएं

कहानी के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए हिन्दी साहित्य के महान कथाकार मुंशी प्रेमचंद लिखते हैं– "कहानी एक रचना है, जिसमें जीवन के एक अंग या किसी एक मनोभाव को प्रदर्शित करना ही लेखक का उद्देश्य रहता है। उपन्यास की भांति उसमें मानव जीवन का संपूर्ण तथा वृहद रूप दिखाने का प्रयास नहीं किया जाता। न उसमें उपन्यास की भांति सभी रसों का सम्मिश्रण ही होता है। वह एक रमणीय उद्यान नहीं, जिसमें भांति–भांति के फूल–बेल–बूटे सजे हैं, बल्कि एक ऐसा गमला है जिसमें एक ही पौधे का माधुर्य अपने समुन्नत रूप में दृष्टि गोचर होता है"।[1]

जैनेंद्र कुमार : "कहानी तो एक भूख है जो निरंतर समाधान पाने की कोशिश करती रहती है"।[2]

जयशंकर प्रसाद : प्रसाद जी ने कहानी की व्याख्या इस प्रकार की है– "सौंदर्य की एक झलक का चित्रण करना और उसके द्वारा रस की सृष्टि करना ही कहानी का उद्देश्य है"।[3]

श्यामसुंदर दास : "आख्या एक निश्चित लक्ष्य या प्रभाव को लेकर नाटय आख्यान है"।[4]

अज्ञेय : "कहानी जीवन की प्रति छाया है और जीवन स्वयं एक अधूरी कहानी है एक शिक्षा है जो उम्र भर मिलती है। कहानीकार मानसिक संघर्ष में जीता ह संघर्ष कला की जननी है"।[5]

आचार्य रामचंद्र शुक्ल : "सादे ढंग से केवल कुछ अत्यंत व्यंजक घटनाएं और थोड़ी बातचीत को सामने लाकर क्षिप्र गति से किसी एक गंभीर संवेदना या मनोभाव में पर्यवसित होने वाली गद्य विधा कहानी है"।[6]

पाश्चात्य विद्वानों की परिभाषाएं

एडगर एलिन पोः "कहानी वह रचना है जो एक ही बैठक में पढ़ी जा सके तथा पढ़ने वाले की हृदय पर एक ही प्रभाव उत्पन्न करें। कहानी में उन सब बातों को निकाल दिया जाता है, जो कहानी के एक ही प्रभाव को आगे ले जाने में सहायक ना। कहानी अपने में पूर्ण होनी चाहिए"।[7]

हडसन : पाश्चात्य आलोचक हडसन ने कहानी की अत्यंत सूक्ष्म एवं सरल परिभाषा दी– "लघुकथा में केवल एक ही मूल भाव रहता है"।[8]

Jayoti Vidyapeeth Women's University
Estd. in 2008
''बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ''

विषय–अनुक्रमणिका

1. **पहला अध्याय** 6
- 1.1 तुलना का अर्थ
- 1.2 तुलना की परिभाषाएं
- 1.3 तुलनात्मक अध्ययन क्या है और परिभाषाएं
- 1.4 निष्कर्ष

2. **दूसरा अध्याय** 7
- 2.1 यशपाल शर्मा का व्यक्तित्व और कृतित्व
- 2.2 यशपाल शर्मा की कहानी संग्रह
- 2.3 यशपाल शर्मा की रचनाओं का संग्रह
- 2.4 भीष्म साहनी का व्यक्तित्व और कृतित्व
- 2.5 भीष्म साहनी की कहानी संग्रह
- 2.6 भीष्म साहनी की रचनाओं का परिचय
- 2.7 निष्कर्ष

3. **तीसरा अध्याय** 9
- 3.1 यशपाल शर्मा एवं भीष्म साहनी की कहानियों में नारी की प्रतिष्ठा
- 3.2 स्वाभिमान
- 3.3 सम्मान
- 3.4 प्रतिष्ठा
- 3.5 सामाजिक परिवेश एवं सामाजिक मान्यता
- 3.6 निष्कर्ष

4. **चौथा अध्याय** 10
- 4.1 यशपाल शर्मा और भीष्म साहनी की कहानियों में नारी जाति की समस्याएं
- 4.2 पारिवारिक समस्याएं
- 4.3 सामाजिक समस्याएं
- 4.4 धार्मिक समस्याएं
- 4.5 आर्थिक समस्याएं
- 4.6 राजनीतिक समस्याएं
- 4.7 सांस्कृतिक समस्याएं
- 4.8 निष्कर्ष

5. **पांचवा अध्याय** 12
- 5.1 यशपाल शर्मा एवं भीष्म साहनी के साहित्य में भाषा का स्वरूप।
- 5.2 भाषा का अर्थ,स्वरूप एवं परिभाषाएं
- 5.3 साधारण भाषा एवं साहित्य भाषा में अंतर
- 5.4 यशपाल शर्मा एवं भीष्म साहनी की कहानी में भाषा स्वरूप
- 5.5 निष्कर्ष

6. **छठा अध्याय** 15
- 6.1 यशपाल शर्मा एवं भीष्म साहनी के कथा साहित्य में शिल्प
- 6.2 शिल्प क्या है
- 6.3 शिल्प संदर्भ में अन्य परिभाषाएं
- 6.4 तथ्य
- 6.5 निष्कर्ष

7. **संदर्भ–ग्रंथ सूची** 17
8. **आलोचनात्मक ग्रंथ सूची** 17
9. **पत्र–पत्रिकाएं** 19
10. **शब्दकोश** 19

पहला अध्याय

1.1 तुलना का अर्थ

तुलना का शाब्दिक अर्थ होता है– दो या दो से अधिक वस्तुओं विचारों लोगों आदि को देखना और समझना की यह किस प्रकार भिन्न है या समान है तुलना कहलाता है। तुलना भिन्न प्रकार की समानताएं और असमानताएं प्राप्त करने के लिए की जाती है।

1.2 तुलना की परिभाषा

प्रसिद्ध पाश्चात्य विद्वान मैक्स मूलर ने इस संदर्भ में कहा है, "All higher Knowledge is gained by comparison and rests on comparison" अर्थात्– ''सभी उच्चतर ज्ञान की प्राप्ति तुलना से हुई है और वह तुलना पर ही आधारित है।[9]

1.3 तुलनात्मक अध्ययन क्या है और परिभाषाएं

विश्वकोशात्मक आक्सफोर्ड डिक्शनरी में तुलना के विषय में लिखा है – ''तुलना, किन्हीं दो वस्तुओं में समान गुणों एवं अंतरों का उद्घाटन या प्रस्तुतीकरण अथवा इन्हीं विशेषताओं का संयोजन है। तुलना कभी–कभी आरंभ में संभावना पूर्ण लग सकती है। पर अंततः उससे कुछ भी सिद्ध न हो सके, यह भी होता है।''[10] उपर्युक्त परिभाषा तुलना–प्रक्रिया को स्पष्ट करती है। तुलना में वस्तुओं का साम्य–वैषम्य मिलना निश्चित नहीं मानती।

प्रसिद्ध विश्वकोशकार वेबस्टर ने तुलना के अर्थ और आशय को बहुत विश्वसनीय ढंग से स्पष्ट किया है– ''दो या दो से अधिक वस्तुओं के समान एवं असमान तत्वों को ज्ञात करने के लिए उन्हें साथ रखकर परीक्षित करना। दो वस्तुओं की असमानता की मात्रा का पता लगाने के लिए भी तुलना की जाती है। दो वस्तुओं के साम्य–वैषम्य की निष्पक्ष जाँच के लिए तथा निष्कर्ष प्राप्ति के लिए भी तुलना की जाती है।''[11]

रेने वेलेक पासनेट के अनुसार, ''साहित्यिक विकास के सामान्य सिद्धांतों का अध्ययन निश्चित ही तुलनात्मक साहित्य का महत्वपूर्ण अंग है।''[12]

पैरिस जर्मन स्कूल के अनुसार, ''तुलनात्मक साहित्य विविध साहित्यों के पारस्परिक संबंधों का अध्ययन है अथवा अंतर्राष्ट्रीय साहित्यिक संबंधों का इतिहास है या फिर वह साहित्येतिहास की एक शाखा है।''[13]

क्लाइव स्टाक क्लाइव स्टाक के अनुसार, ''तुलनात्मक साहित्य में विभिन्न भाषाओं में लिखित साहित्यों अथवा उसके संक्षिप्त घटकों की साहित्यिक तुलना होती है और यही उसका आधार तत्त्व है।''[14]

डॉ. नगेंद्र तुलनात्मक साहित्य को स्पष्ट करते हुए लिखते हैं– ''तुलनात्मक साहित्य जैसे नाम से ही स्पष्ट है साहित्य का तुलनात्मक दृष्टि से अध्ययन प्रस्तुत करना है। तुलनात्मक साहित्य एक प्रकार का साहि त्यि क अध्ययन हैजो अनेक भाषाओं को आधार मानकर चलता है और जिसका उद्देश्य होता है, अनेकता में एकता का संधान।''[15]

डॉ. रवींद्रकुमार जैन के अनुसार, ''तुलनात्मक अनुसंधान के अंतर्गत किन्हीं दो समकालीन या विषमकालीन समान गुणात्मक प्रतीत होने वाली कृतियों का अध्ययन किया जाता है। यह अध्ययन दो युगों, दो भाषाओं एवं दो व्यक्तियों का हो सकता है। यह अध्ययन गंभीर, वैज्ञानिक, तटस्थ, सांगोपांग एवं निष्कर्ष मूलक होना चाहिए।'' प्रस्तुत परिभाषा तुलना के व्यापक क्षेत्र को तथा स्वरूप का सूक्ष्मता से स्पष्ट करती है। इसमें तुलना के समान गुणों पर अधिक बल दिया है। तुलना के गंभीर, वैज्ञानिक, तटस्थ एवं निष्कर्ष मूलक जैसी महत्वपूर्ण विशेषताओं को भी इंगित किया है।[16]

वसंत बापट के अनुसार, ''तुलना को अधिक व्याख्यायित करने का हो तो साधर्म्य और वैधर्म्य, उद्गम और प्रभाव इन चार दृष्टियों से किया गया शोध, ऐसा कहना होगा।'' बापट जी की परि भाषा शोध की प्रक्रिया एवं अंगों की आरे इंगित करती है। तुलना में आधारभूत बातें कौन–सी हो स्पष्ट करती है।[17]

डॉ. सरगु कृष्णमूर्ति तुलना के बारे में लिखते हैं– ''तुलनात्मक अनुसंधान विभिन्न भाषा–साहित्यों की कृतियों एवं स्थितियों का तुलनात्मक विवेचन प्रस्तुत करता हुआ, विभिन्न भाषाओं एवं क्षेत्रों में ध्वनित मानव जाति के हृदय एवं मस्तिष्क में परिलक्षित भाव साम्य का समुद्घाटन कर विश्व–मानवता की एकता का निरुपम–विश्लेषण करता है।''

कृष्णमूर्ति जी की परिभाषा तुलना के एक उद्देश्य को स्पष्ट करने वाली है। तुलनात्मक अध्ययन के माध्यम से विश्व मानव की एकता स्पष्ट होनी चाहिए, इस पर बल देती है।[18]

डॉ. आनंद पाटिल के अनुसार, ''तुलना केवल साम्य या सममूल्य ढूंढना नहीं है, साम्य और भेद इनके बीच का वह द्वंद्व है। जो बातें समान दिखती हैं उनमें भेद और जो भिन्न लगती है उनमें साम्य ढूँढना ऐसी यह प्रक्रिया है।''[19]

इंद्रनाथ चौधरी के अनुसार, ''तुलनात्मक शब्द में तुलने की प्रक्रिया जुड़ी हुई है और तुलना में वस्तुओं को कुछ इस प्रकार प्रस्तुत किया जाता है, जिससे उनमें साम्य या वैषम्य का पता लग सके।''[20]

1.4 निष्कर्ष

तुलनात्मक अध्ययन पद्धति से हम दो कृति यों लेखकों और साहित्यिक विचार का बिना किसी पक्षपात और त्रुटि के बगैर अध्ययन कर सकते है तुलनात्मक अध्ययन के द्वारा हम हमारे पुराने साहित्य की तुलना नए साहित्य के मानदंडों से करके नए आधारों का निर्माण कर सकते हैं साहित्य मानव निर्मित माना जाता है उस पर उस समय का कालखंड और उसके व्यक्तित्व का प्रभाव निश्चित रूप से उस समय के साहित्य पर दिखाई देता है समय की परिवर्तन के साथ उस साहित्य का उद्देश्य को स्पष्ट करने के लिए हमें तुलनात्मक अध्ययन की पद्धति का उपयोग आवश्यक समझा जाता है। यह साहित्य और मानव दोनों के लिए विकास का साधन है इससे हमें नई दिशाएं और नया दृष्टि कोण प्राप्त होता है और हम हमारी भारतीय संस्कृति, सभ्यता और उसके साहित्य को हम बिना किसी त्रुटि से प्रस्तुत कर सकते हैं।

दूसरा अध्याय

2.1 यशपाल शर्मा का व्यक्तित्व और कृतित्व

व्यक्तित्व

यशपाल शर्मा का जन्म 3 दिसंबर 1903 हिमाचल प्रदेश में, नादौन के निकट, भूम्पल गाँव में हुआ था। उनके पिता का नाम हीरालाल और माता का नाम प्रेमा देवी था। पारिवारिक परिस्थितियों के चलते उनकी माता को फिरोजपुर छावनी में अध्यापिका की नौकरी के लिए जाना पड़ा और यशपाल शर्मा का बाल्यकाल वहां व्यतीत हुआ आरंभ से उन्होंने अपनी मां को जीवन जीने के लिए संघर्ष करते हुए देखा, इससे उनके मन में नारी की शक्ति का शुरू से ही प्रभाव रहा। यशपाल शर्मा अपने विद्यार्थी काल से ही क्रांतिकारी विचारों से भरे हुए थे, उन्होंने देश की आजादी के आंदोलन में भरपूर सहयोग किया। लाला लाजपत राय और भगत सिंह से उनकी घनिष्ठता थी। आजादी की लड़ाई में भाग लेते हुए उन्हें कई बार जेल जाना पड़ा, जेल में रहते हुए ही उन्होंने अपनी पहली कहानी संग्रह की रचना की। यशपाल शर्मा मार्क्सवादी विचारधारा से प्रभावित है यह प्रभाव उनकी रचनाओं में भी झलकता है। इसी कारण इन्हें यथार्थवादी रचनाकार कहा जाता है। इन्होंने अपनी रचनाओं में सामाजिक रूढ़ियों, पुराने अंधविश्वास, सामाजिक कुरीतियों आदि का खुलकर विरोध किया। यही यशपाल की विशेष प्रतिभा है। इस प्रकार की कहानी बनाने में ईमानदारी की कहीं अधिक आवश्यकता होती है।

एक बहुत गहरी सोच, रचनात्मक कल्पना इस तरह के विचार पर प्रहार करती है और यशपाल के पास वह है। यही कहानी को ऊपर उठाता है, परोक्ष रूप से बात को स्पष्ट करता है।

कृतित्व

यशपाल शर्मा एक निर्भीक वक्ता, स्पष्टवादी और राष्ट्रवादी लेखक थे इन्होंने अपनी रचनाओं में धर्म की रूढ़िवादिता अंधविश्वास सामाजिक कुरीतियों का खुलकर विरोध किया है। यशपाल शर्मा के 1940 से 1976 तक उनके 16 कहानी संग्रह प्रकाशित हुए हैं. 17वाँ संग्रह मरणोपरांत प्रकाशित हुआ यशपाल शर्मा मैं 8 बड़े उपन्यास और तीन लघु उपन्यास लिखें दादा कामरेड देशद्रोही पार्टी कामरेड अमिता झूठा सच 12 घंटे दिव्या आदि इन्होंने कई पत्र–पत्रिकाओं में दर्जनों लेख लिखें। इन्होंने यात्रा संस्मरण भी लिखे हैं लोहे की दीवार के दोनों ओर आदि यशपाल शर्मा ने अनुदित लिखी है, सिंहावलोकन नाम से आपने अपनी आत्मकथा लिखी। इन्होंने विप्लव नामक पत्रिका का सम्पादन भी किया।

2.2 यशपाल शर्मा का कहानी संग्रह

यशपाल शर्मा एक सफल कहानीकार, निबंधकार एवं नाटककार रहे हैं। इनकी कहानियों का आधार–धार्मिक रूढ़ियों का विरोध, आर्थिक विषमता, आपराधिक मनोवृत्ति और मार्क्सवाद का प्रभाव आदि रहा है। यशपाल शर्मा के कहानी संग्रह में लगभग 206 कहानियां सम्मिलित है।

कहानी सग्रंह–तर्क का तूफान(1943 ई), ज्ञानदान (1944 ई.), अभिशाप(1944 ई.) पिंजरे की उड़ान, वह दुनिया(1941 ई.), फूलों का कुर्ता (1949 ई.), भस्मावृत चिंगारी(1946 ई.), धर्मयुद्ध(1950 ई.), उत्तराधिकारी(1951 ई.), तुमने क्यों कहा मैं सुन्दर हूँ, उत्तमी की माँ, ओ भैरवी, चित्र का शीर्षक(1952 ई.), सच बोलनेकी भूल, खच्चर और आदमी, भूख के 3 दिन, लैंपशेड।

2.3 यशपाल शर्मा की अन्य रचनाओं का संग्रह

उपन्यास–दादा कामरेड(1941 ई.), देशद्रोही(1943 ई.), दिव्या(1945 ई.), पार्टी–कामरेड(1947 ई.), मनुष्य के रूप(1949 ई.), अमिता(1956 ई.), झूठा सच के दो भाग प्रथम 1958 वतन और देश द्वितीय 1960 देश का भविष्य, बारह घंटे, अप्सरा का श्राप(2010 ई.), क्यों फंसे, तेरी मेरी उसकी बात(1974 ई.) आदि।

निबंध संग्रह–चक्कर, क्लब(1940 ई.), न्याय का संघर्ष(1940 ई.), बात–बात में बात (1950 ई.), देखा, सोचा, समझा(1951 ई.) गांधी की शव परीक्षा(1941 ई), पत्र–पत्रिका के दर्जनों लेख।

यात्रा संस्मरण–राह बीती, लोहे की दीवारों के दोनों और आदि, कुछ अनुदित रचनाएं भी मिलती है जिनमें– जनानी, डयोढ़ी, पक्का कदम जैसे उपन्यास।

2.4 भीष्म साहनी का व्यक्तित्व और कृतित्व

व्यक्तित्व

भीष्म साहनी का जन्म 8 अगस्त 1915 रावलपिंडी पाकिस्तान में हुआ। उनका परिवार एक मध्यमवर्गीय परिवार था जो कि भारत के विभाजन के समय भारत में बस गए थे। इनके पिता का नाम हरबंस लाल साहनी तथा माता का नाम श्रीमती लक्ष्मी देवी था। उनकी पत्नी का नाम शीला था, इनका विवाह 1944 मेंहुआ था। 1935 में गवर्नमेंट कॉलेज से अंग्रेजी

में M.A. की परीक्षा पास की, उसके के पश्चात उन्होंने पीएचडी की डिग्री हासिल की। भीष्म साहनी क्रांतिकारी गतिविधियों में सक्रिय रहते थे जिसके चलते 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन में शामिल होने की वजह से जेल में सजा भी काटनी पड़ी।

कृतित्व

भीष्म साहनी जी को पंजाबी, हिंदी और उर्दू भाषा का अच्छा ज्ञान था, साथ ही इन्हें संस्कृत की भी अच्छी जानकारी थी। वह विभाजन के बाद भारत आकर समाचार पत्रों में लिखा करते थे बाद में उन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय में साहित्य के प्रोफेसर की जॉब की।

भीष्म साहनी को अलग–अलग भाषा का ज्ञान होने की वजह से प्रकाशन गृह में अनुवादक की कार्य का भी कार्य करने का अवसर प्राप्त हुआ। इन्होंने लगभग दो दर्जन रूसी किताबों का हिंदी में रूपांतरण किया।

2.5 भीष्म साहनी का कहानी संग्रह

भीष्म साहनी के दस कहानी संग्रह हैं, पहली कहानी "अबला" इंटर कॉलेज की पत्रिका रावि में छपी थी और दूसरी कहानी अमृत राय के संपादन में हंस पत्रिका में छपी थी जिसका नाम था नीली आंखें। साहनी जी ने भाग्य रेखा(1953 ई.), पटेरिया(1973 ई.), पहला पाठ(1957 ई.), भटकती राख (1966 ई.), वांगचू(1978 ई.), शोभायात्रा(1981 ई.), निशाचर(1983, और मेरी प्रिय कहानियाँ एवं अमृतसर आ गया।

2.6 भीष्म साहनी की रचनाओं का परिचय

उपन्यास : तमस (1973 ई.), कड़ियां (1970 ई.), कुंतो (1993 ई.), बसंती (1980 ई.), मयौदास की माड़ी(1988 ई.), झरोखे(1967 ई.) नीलूनीलिमा नीलोफर(2000 ई.)

नाटक : कबीरा खड़ा बाजार में (1981 ई.), हानूश(1977 ई.) माधवी (1984 ई.), मुआवजे(1993 ई.) आलमगीर (1996 ई). मेरा रंग दे बसंती चोला (1999 ई.)

आत्मकथा : आज के अतीत

निबंध संग्रह : अपनी बात

बालोपयोगी : गुलेल का खेल, वापसी

पत्रपत्रिकाएं : 'नई कहानियां' का ढाई साल तक संपादन किया

2.7 निष्कर्ष

यशपाल शर्मा ने अपने कथा कहानियां में सामाजिक यथार्थ का चित्रण किया हैं। इन्होंने मिथ्या नैतिक आदर्शों पर तीव्र कटाक्ष किया हैं. इनकी कहानियों में सामाजिक स्वतंत्रता, आर्थिक विषमता तथा यौन भावना की प्रधानता देखी जाती हैं. इनकी कहानियों का कथानक चुस्त, व्यंजक और वास्तविक चरित्रों पर आधारित था। इनकी कहानियों में यह सिद्ध किया है की निम्न वर्ग का दुख उच्च वर्ग का हो एक समान नहीं होता। पाश्चात्य संस्कृति से वह बहुत प्रभावित थे, उन्होंने अपनी कहानियों में धर्म की रुढिवादिता, अन्धविश्वास, सामाजिक कुरीतियों का सतत विरोध किया है और समाज के नीचे दर्जे व मध्यमवर्गीय लोगों के प्रति उनकी पूर्ण सहानुभूति रही है, इसीलिए उनका समग्र लेखन आम इंसान से जुड़ा हुआ है

साहनी जी का परिवार बड़ा ही संयमित और संस्कारों से भरा हुआ था। जिसकी वजह से उनका व्यक्तित्व और महान हो होता गया और इसकी छाप उनके साहित्य में साफ झलक रही थी जैसे उनका सुशील, शांत, परोपकारी, विनम्र, धैर्य, शालीनता और चेहरे पर मुस्कान लिए व्यक्तित्व था वैसे ही उनका साहित्य में बहुत अनुशासन मेहनत और धैर्य ईमानदारी और लगन साफ दि खाई देती है ये मानवतावादी लेखक हैं और इनके व्यक्तित्व की महान मानवतावाद के दर्शन इनकी कहानियों में दिखाई देता है। इनकी कहानीयों में मानव को मानव से जोड़ने की हर संभव प्रयास किया है इन्होंने अपने कहानी के माध्यम से सामाजिक विषमता और संघर्षों के बंधन को तोड़ कर आगे बढ़ने का आवाहन किया है इनकी साहित्य में सर्वाधिक मानवीय करुणा मानवीय मूल्य और नैतिकता विद्यमान है इन्होंने धर्मनिरपेक्षता सांप्रदायिकता को खत्म करने की और राष्ट्रीय एकात्मता की मांग रखी। इनके साहित्य में पारिवारिक, सामाजिक के साथ ऐतिहासिकता, आधुनिकता एवं मनोवैज्ञानिक दार्शनिक की झलकी होती है, जिससे इनके व्यक्तित्व का पता चलता है कि वह किस माहौल में पले बढ़े हैं।

इन्होंने समाज में व्याप्त झूठी धर्मा डंबरता, भेदभाव, संकीर्ण, मनोवृत्ति को खत्म करने का आह्वान किया है। साहनी जी अपनी कहानियों द्वारा समग्र परिवेश को चित्रित करने वाले महान साहित्यकार है इनकी कथानक में बहुत कुछ कहने की कला और सूक्ष्म निरीक्षण की शक्ति उसे एक साधारण से असाधारण कथा बना देती है। भीष्म साहनी ने समाज के पिछड़े लोगों की समस्याओं हो बड़े ही आसान भाषा में और सटीक शब्दों में अपनी रचनाओं में अभिव्यक्त किया है। इसकी वजह से इन्हें प्रेमचंद की परंपरा का साहित्यकार कहा जाता है।

तीसरा अध्याय

3.1 यशपाल शर्मा एवं भीष्म साहनी की कहानियों में नारी की प्रतिष्ठा

यशपाल शर्मा भीष्म साहनी ने अपनी कहानियों में नारी की प्रतिष्ठा स्थापित करते हुए नारी के ऐसे रूप जो अपनी दया, संयम और सहनशीलता से घर का सुख बनाए रखती है सामाजिक और पारिवारिक रिश्तो को अपने प्रेम और ममता से एक सूत्र में बांधे रखती है कहानीकारों ने महिला के साथ पारिवारिक और सामाजिक व्यवस्था के हाथों होने वाले शोषण और अत्याचार को दिखाया है स्त्री को परंपरा से हटकर कार्य करने का साहस दिखाया है। इन्होंने अपनी कहानी में स्त्री को एक इंसान के रूप में दिखाने का प्रयास किया है साथी अपनी कहानियों के द्वारा स्त्री की देह पर उसके अधिकार को विमर्श के केंद्र में लाने का ऐतिहासिक कार्य किया है।

3.2 स्वाभिमान

नारी हमेशा से ही समाज की संरचना का दृढ़ और आवश्यक अंग रही है। वैदिक काल में महिलाओं की सामाजिक प्रतिष्ठा उच्च्य स्तर पर थी। माता पिता की अनुमति से अपने पति का चुनाव करने की आजादी थी। कन्याओं को बाहर आने जाने की पूर्ण रूप से स्वतंत्र थी। धीरे–धीरे समय बदलने पर स्त्री का समाज में स्तर गिरता चला गया, उसे संपत्ति के उत्तराधिकार से वंचित कर दिया गया, पुत्री का जन्म होना दुख का कारण माने जाने लगा, बहू–पत्नी विवाह का प्रचलन समाज में होने लगा। स्त्री को अपनी स्थिति और प्रतिष्ठा को बनाए रखने के लिए संघर्ष करना पड़ा। यशपाल शर्मा ने अपने कथा साहित्य में मध्यमवर्गीय नारी चरित्रों का समग्र चित्रण किया है इन्होंने नारी विषयक विश्वासों और आस्थाओं का प्रतिबिंब अपनी कहानियों में दर्शाया नारी की अस्मिता और सम्मान के प्रति निष्ठा का प्रमाण दिया है सामाजिक व्यवस्था के बदलाव की आवश्यकता अनुभव की है और यशपाल शर्मा का विश्वास था कि नारी की जागृति और उसकी हिस्सेदारी के बिना समाज परिवर्तन अपूर्ण रहेगा। यशपाल शर्मा ने नायिका के रूप में स्त्री को चित्र ना करके बुद्धिमती, ज्ञानी, विवेकशील, निर्दिष्टवादी व सामाजिक शिरकत करनेवाली स्त्री स्वरूप को सामने रखा है। वह चाहते थे की समाजवाद केवल समाज व्यवस्था के लिए ही नहीं अपितु स्त्री पुरुष के आंतरिक संबंधों में भी समानता को प्रतिष्ठित करें।

3.3 सम्मान

साहनी जी की कहानियां स्त्री को परिवार की बंदिशों में दिखाया गया कि स्वयं की कोई स्वतंत्रता नहीं वह अपने लिए कोई निर्णय नहीं ले सकती ज्यादातर कहानियां संयुक्त परिवार के विषय की है उनकी कहानियों में संयुक्त परिवारों में सभी नारियों की उचित देखभाल नहीं होती वे मन ही मन प्रताड़ित होती रहती है चाहे वह चीफ की दावत, भाग्य रेखा, घर की इज्जत, लीला नंदलाल की, खून का रिश्ता, कई कहानियों में साहनी जी ने अपनी कहानियों में नारी को संयुक्त परिवार और समाज की बेड़ियों में जकड़ा हुआ चित्रित किया है उसे कहीं दुखों का सामना करना पड़ता है साथ ही परिवार की जिम्मेदारियों को निभाना पड़ता है।

3.4 प्रतिष्ठा

उनकी कहानियों में पति–पत्नी के संबंधों का भी वर्णन किया गया उनका प्रेम और उनके संबंधों का विवरण किस प्रकार आता है इसका वर्णन भी इन्होंने अपनी कहानियों में किया। उनकी कहानियों में पत्नी अपने पति की खुशी के लिए सारे ऐशो आराम त्याग कर दाल रोटी खाने को तैयार हो जाती है पति के ना कमाने पर स्त्री ही मेहनत मजदूरी करके अपने परिवार का पालन पोषण करती है बेमेल विवाह की त्रासदी को भी वह स्वीकार कर लेती है। इस प्रकार विभिन्न परिस्थियों में नारी स्थिति का चित्रण किया है।

3.5 सामाजिक परिवेश एवं सामाजिक मान्यता

भीष्म साहनी और यशपाल शर्मा दोनों ही के कहानियों में स्वतंत्रता के बाद व्याप्त भ्रष्टाचार उच्च वर्ग का स्वार्थ और निम्न वर्ग की उदासीनता, हीनता, आत्महीनता आदि का चित्रण किया है। इन सबका सामाजिक परिवेश पर प्रभाव पड़ता है जिसका अपनी कहानियों द्वारा बताया है। दोनों ने ही मार्क्सवादी दृष्टि से सशक्त कहानियां लिखी इन्होंने समाज की पुरानी दकियानूसी रीति–रिवाजों पर तीखा प्रहार किया इन्होंने निर्भीकता से पुराने धार्मिक नीतियों के विरुद्ध अपनी कहानियों में लिखा।

3.6 निष्कर्ष

यशपाल शर्मा की कहानियों में मुख्यतः इस बात पर जोर रहा कि समाज में नारी के अस्तित्व की समस्या को पाठकों के सामने रखा जाए। नारी को उसकी पराधीनता एवं पराधीन मानसिकता सेमुक्त करके आत्मनिर्भर बनाना चाहतेथे। पुरुषों को जितने अधिकार प्राप्त हैं स्त्रियों को भी उतने ही मिले, यशपाल पुरुषों में मानवीय संवेदना तथा स्त्री मुक्ति के पक्षधर विचारधारा को विकसित करना चाहते हैं स्त्री का संपूर्ण स्वतंत्र निर्माण के लिए उसका आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होना आवश्यक है आर्थिक आत्मनिर्भरता से ही उसे सामाजिक और सांस्कृतिक आत्मनिर्भरता प्राप्त होगी, यशपाल शर्मा हर तरफ से ही स्त्रियों को आत्मनिर्भर देखना चाहते थे। कहानीकार साहनी जी का मूल स्वर मानवतावादी ही रहा उनका दृष्टिकोण हमेशा मानववादी रहा इन्होंने अपनी कहानियों को गली मोहल्ले कस्बों शहरों महानगरों अंचलों के सीमित दायरे में नहीं बांधा इनका दृष्टिकोण व्यापक परिवेश का था साहनी जी ने अपनी कहानियों में सामाजिक राजनीतिक आर्थिक धार्मिक आदि के नीति नियम और सिद्धांतों का जो पतन हो रहा है उसका पुरजोर व्याख्यान किया है। समाज में व्याप्त समस्याएं और बुराइयों के प्रति अपने मन की भावनाओं को पाठकों तक पहुंचाने का काम बखूबी किया है। साहनी जी ने युग की संवेदना को अपनी कहानियों में उतारा है।

चौथा अध्याय

4.1 यशपाल शर्मा एवं भीष्म साहनी की कहानियों में नारी जाति की समस्याएं

हमारे समाज में नारी के प्रति जनमानस का हमेशा से दोहरा व्यवहार रहा है, एक और उसे देवी का दर्जा दिया जाता है, कन्या के रूप में उसे पूजा जाता है और दूसरी ओर उसे पति के विनाश का कारण एवं भोग की वस्तु समझा जाता है। यशपाल शर्मा और भीष्म साहनी की कहानियों में स्त्री जाति की समस्याओं को विविध रूपों में दर्शाया गया है। पारिवारिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक समस्याओं के साथ यौन—शोषण समस्याओं पर भी विशेष वर्णन किया है एवं समस्याओं को लेकर सामाजिक और नैतिक मूल्यों के नए प्रश्नों की ओर ध्यान आकर्षित किया है।

4.2 पारिवारिक समस्याएं

प्राचीन काल से भारत में संयुक्त परि वार की व्यवस्था चली आ रही है, यद्यपि औद्योगिक और वैज्ञानिक तरक्की के कारण परिवार विघटित होते जा रहे हैं। फिर भी संयुक्त परिवार अभी भी विद्यमान है। संयुक्त परिवारों की समस्याओं का अध्ययन हम इस संदर्भ में करेंगे। दोनों कथाकारों ने अपनी कथाओं में समाज में व्याप्त कुप्रथाओं यथा—विधवा स्त्री की सामाजिक स्थिति, अनमेल विवाह, बहु—विवाह, जाती—पाती, दहेज—प्रथा की व्यवस्था और भाग्यवाद पर भरोसा करने की निरर्थक मानसिकता के साथ अपना जीवन जीने की कोशिश करती स्त्री जैसी समस्याओं का सटीक वर्णन किया है। यशपाल शर्मा और भीष्म साहनी जी ने अपनी इन कहानियों में परंपरागत रूप से चलते रहे नैतिक मूल्यों को आधुनिक प्रगतिशील सोच के अनुरूप प्रस्तुत किया है। नारी समस्या एंजिन को हम साधारणतया नारी समस्या कह कर संबोधित करते हैं वस्तुतः वह पुरुष वर्ग द्वारा बनाई गई बेड़िया है। जिसमे नारी जाति छटपटाती अपना जीवन व्यतीत करती आई है। समाज में प्राचीन काल से ही पुरुष की स्थिति अति—विशिष्ट रही है, इस स्थिति में पुरुष वर्ग ने अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए हमेशा से स्त्री का निर्ममता से उपभोग किया है। यशपाल ने अपनी कथा—साहित्य में नारी की विभिन्न समस्याओं यथा—बाल विवाह, विधवा जीवन की त्रासदी, अंधविश्वास, रूढ़िवाद, सामंती संस्कारों की जकड़न, नारी के सतीत्व, पुरुष निर्भरता, परतंत्रता और व्यक्तित्व हीनता एवं सामाजिक परिवेश में दो हरे मानदंडों की मानसिकता को प्रस्तुत किया।

4.3 सामाजिक समस्याएं

साहित्यकार एक सामाजिक प्राणी होने के कारण वह अपने परिवेश, रीति रिवाज, धर्म—कर्म और मानवीय व्यवहार से अपने साहित्य को लिखने की प्रेरणा लेता है। दोनों साहित्यकार अपने साहित्य में समाज की समस्याएं लिखकर, समाज में एक नई क्रांति लाना चाहते थे। इन्होंने अपनी कहानियों में कई समाजिक समस्याओं को उठाया है। जिनमें शिक्षा, वेश्या समस्या, अकेलापन, उपेक्षा, आर्थिक विषमता, अन्याय तथा अंधश्रद्धा आदि समस्याओं को अपनी कहानीयों में चित्रित किया है। इन्होंने अपनी भिन्न—भिन्न कहानियों में स्त्री पात्रों को विभिन्न प्रकार की समस्याओं से गुजरते हुए दिखाया है। नारी की क्षमता, परिपक्वता, साहस और धैर्य का मुखर चित्रण किया है, जो कि वर्तमान नारी सम्मान के लिए मजबूत संदेश है। ज्यादातर लेखकों की कहानियों में नारी को आदर्श रूप जैसे की, मां, पत्नी, बहन, विधवा स्त्री व आदि रूप में चित्रित किया है, लेकिन साहनी जी की रचनाओं में वर्तमान आधुनिक समाज के नारी जीवन को पेश करने की कोशिश की गई है। इनकी कहानियों को ध्यान से पढ़ा जाए तो उसमें नारी के कई रूपों का अनुभव होता है जिसमें नारी आत्मापीड़न महसूस करके अपने मन में विद्रोह की भावना उत्पन्न करती है साथ में अपनी कहानियों में स्त्रियों की करुण गाथाएं दिखाई हैं। इसमें प्रायः नारी सामाजिक मान्यताओं और नियति को स्वीकार कर लेती है, आत्म निर्णय लेने का उनमें सामर्थ्य नहीं होता है। कई कहानियों में अधिकांश स्त्री पात्रों को दी गई स्त्रियों के प्रति कोई विरोध नहीं परिवार और समाज से नैतिक बल न मिलने के कारण वह अपनी परिस्थितियों के विरुद्ध विद्रोह नहीं कर पाते हैं और अपने घुटने टेक देते हैं। उनकी कहानियों में स्त्री जाति के पैरों में सभी प्रकार की बेड़ियां पड़ी हुई है और वह इन वीडियो में झटपट आती रहती है पर इनसे निकल नहीं पाते और उसे ही अपनी नियति मानकर स्वीकार कर अपना जीवन जी रही होती है पितृसत्तात्मक समाज में स्त्री पुराने मानदंडों में बदलाव की मांग नहीं करती।

4.4 धार्मिक समस्याएं

धर्म के द्वारा अनेक सामाजिक मूल्यों की रक्षा होती है, धर्म समाज का नैतिक पतन होने से रक्षा करता है। मनुष्य के लिए धर्म की आवश्यकता अपनी मनुष्यता को बनाए रखने के लिए आवश्यक है। सभ्यता संस्कृति के विकास के बावजूद धर्म समाज और मानव जीवन का एक अभिन्न अंग है बना हुआ है। धर्म से ही व्यक्ति अपनी असफलता, आकांक्षा और आशा—निराशा से समझौता करने की सहायता लेता है। ऐसे व्यक्ति को मन की शांति मिलती है। इस तरह सामाजिक नियंत्रण के लिए धर्म की आवश्यकता का महत्वपूर्ण स्थान है। दोनों प्रसिद्ध कथाकारों की कहानियों में हम समाज की धार्मिक समस्याओं का भी वर्णन सटीक रूप में पाते हैं।

4.5 आर्थिक समस्याएं

देश की आजादी के बाद देश की आर्थिक स्थिति बिल्कुल जर्जर हो चुकी थी चारों और गरीबी भुखमरी

बेरोजगारी फैली हुई थी जनसंख्या अधिक होने कारण लोगों के पास जीविकायापन करने के लिए लायक भी धन नहीं था देश की गरीबी का प्रभाव समाज के सभी तबके के पुरुष और स्त्री के पड़ा श्री को भी अपना घर परिवार पालने के लिए घर की देहरी लांघनी पड़ी और घर से बाहर काम करना पड़ा। ऐसे में धनिक वर्ग, निम्न वर्ग की महिला का शोषण करने लगा। उन्हें मानसिक और शारीरिक रूप से प्रताड़ित किया गया। इन समस्याओं को दोनों ही कहानीकारों ने अपनी कहानियों में बड़ी सावधानी और विस्तृत रूप में उतारा है।

4.6 राजनीतिक समस्याएं

साहित्यकार भी देश की एक इकाई है और राजनीतिक परिवर्तन का प्रभाव उन पर भी समान रूप से पड़ता है। देश की आजादी के बाद लोगों ने स्वर्णिम भारत की कल्पना की थी, एक नई शासन व्यवस्था होगी, देश प्रगति करेगा और सबके भाग खुल जाएंगे। लेकिन कई वर्षों तक स्थिति में कोई बदलाव नहीं आया और बलवान और ताकतवर लोग अपने ओहदे और शक्ति का उपयोग कर आम जनता को और लूट रहे थे। चारों तरफ हाहाकार मचा था ऐसे में यशपाल शर्मा और भीष्म साहनी ने इन राजनीति क समस्याओं को अपने साहित्य में स्थान दिया और ऊंचे ओहदे पर बैठे हुए लोगों को आम जनता की समस्याओं से अवगत कराया।

4.7 सांस्कृतिक समस्याएं

संस्कृति मात्र सोच–समझ अथवा अभिरुचि का संकेत नहीं देती साथ ही सामाजिक और आध्यात्मिक चेतना का भी परिचय कराती है। यह ऐसा कारक है जो समाज को परस्पर जोड़े रखता है। जगत का प्रतिबिंब उसके समाज की संस्कृति में दिखाई देता है। धीरे–धीरे संस्कृति का हनन होने लगा, मनुष्य का चरित्र में गिरावट आने लगी, वह अपने स्वार्थ, अंधविश्वास, लालच में इतना लिप्त होता गया कि वह स्वयं मनुष्य होते हुए, दूसरे मनुष्य पर अत्याचार करने लगा। जिसका सबसे ज्यादा प्रभाव स्त्रियों पर आया– उन्हें कई प्रकार की सामाजिक बेड़ियों में बांधा जाने लगा, उन्हें कमतर माना जाने लगा। इस काल में स्त्रियों का एक वर्ग ऐसा बन गया जो वेश्या बनने को बाध्य हुआ। जनसाधारण तंत्र–मंत्र और अंधविश्वास के जाल में आ गया जिससे तंत्र–मंत्र, पूजा–पाठ एवं व्रत–उपवास अनुष्ठानों तक ही धर्म केंद्रित हो गया।

4.8 निष्कर्ष

विभाजन के दौरान पीड़ित महिलाओं की मनोवैज्ञानिक स्थिति का विश्लेषण करने का प्रयास करता है। कहा जा सकता है कि विभाजन का सबसे ज्यादा शिकार महिलाएं और लड़कियां हुईं। विभाजन में शामिल सभी समुदायों की महिलाओं को हिंसा और छेड़छाड़ का सबसे क्रूर रूप में सामना करना पड़ा। अपहरण, बलात्कार, अपहरण, जबरन विवाह, सम्मान के लिए हत्या, वेश्यालयों में रहने के लिए मजबूर करना ऐसी चीजें थीं जो संबंधित समुदायों की महिलाओं और लड़कियों के लिए एक आम व्यवहार बन गईं। विपरीत समुदायों के पुरुषों ने दूसरे समुदाय की महिलाओं का उल्लंघन, हत्या और अंग–भंग करके विभाजन का बदला लिया। भीष्म साहनी ने विभाजन की अपनी वास्तविक स्मृतियों से महिलाओं के दर्द को बयान कर उनकी वास्तविक स्थिति को चित्रित करने का प्रयास किया है।

पिछले कुछ वर्षों में भारत में महिलाओं की स्थिति में कई बदलाव आए हैं। अध्ययनों के अनुसार प्रारंभिक वैदिक काल में महिलाओं को पुरुषों के समान दर्जा और अधिकार प्राप्त थे। बाद में इस्लामी आक्रमण और बाद में ईसाई धर्म के प्रसार के साथ महिलाओं की स्थिति में गिरावट शुरू हो गई। सती, जौहर और देवदासी जैसी प्रथाएं अस्तित्व में आईं, हालांकि आधुनिक भारत में इन पर प्रतिबंध है। ब्रिटिश शासन के दौरान कई सुधारकों जैसे राममोहन राय, ईश्वर चंद्र विद्यासागर आदि ने महिलाओं के उत्थान के लिए लड़ाई लड़ी। बाद में महिलाओं ने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

भारत में महिलाओं को पारंपरिक रूप से साहित्य में सौम्य, विनम्र, गर्म और नरम दिल के रूप में चित्रित किया गया है। जिस परिदृश्य में उन्हें रखा गया है वह यह है कि उन्हें समाज के पुरुष सदस्यों के अधीन रखा गया था। वे कई स्थानों पर थे, उन्हें परिवार तक ही सीमित रखा गया और पुरुषों के बराबर अधिकार भी बांटे गए। बाद में बीसवीं सदी के शुरुआती दौर में महिलाओं की स्थिति में बदलाव देखने को मिला। राजा राम मोहन राय, ज्योतिबा फुले और महात्मा गांधी ने भारत में महिलाओं की स्थिति के उत्थान में अपना योगदान दिया। महिला शिक्षा के प्रसार ने आत्मविश्वास, आर्थिक स्वतंत्रता और स्वयं के लिए सम्मान का मार्ग प्रशस्त किया। महिलाओं ने यह भी जानने का प्रयास किया कि वे अब तक पुरुषों द्वारा हाशिए पर, शोषित और अपमानित क्यों थीं। साहित्य और अन्य माध्यमों से नारीवाद के बारे में जागरूकता के प्रसार ने उन्हें मजबूत बनाया और वे पूरी प्रतिबद्धता के साथ समाज के विकास में भाग लेने लगीं। कई प्रसिद्ध लेखकों ने महिला पात्रों को पितृसत्तात्मक समाज के खिलाफ लड़ने और अंधेरे से बाहर निकलने के दृष्टिकोण में बदलाव के साथ प्रस्तुत किया। अंततः महिलाओं ने उस भूमिका का विरोध करना शुरू कर दिया जो उन्हें उनकी सहमति के बिना निभाने के लिए मजबूर किया गया था, उन्होंने अधीन होने से इनकार कर दिया।

पांचवा अध्याय

5.1 यशपाल शर्मा एवं भीष्म साहनी के साहित्य में भाषा का स्वरूप

यशपाल शर्मा एवं भीष्म साहनी के साहित्य में भाषा का स्वरूप एक समान सा ही है दोनों का लेखन सराहनीय है दोनों ही निर्भीक वक्ता और राष्ट्रवादी लेखक थे। इनकी रचनाओं में गांधीवादी का प्रभाव और मार्क्सवादी विचारधारा से प्रेरित होने का भाव भी दिखाई देता था।

यशपाल शर्मा खड़ी बोली के प्रसिद्ध लेखक थे उन्होंने अपनी रचनाओं में व्यावहारिक भाषा का प्रयोग किया। इनको उर्दू, अंग्रेजी और संस्कृत के साथ कई भाषाओं का ज्ञान था। और यह अपने प्रश्नों में किसी भी भाषा का प्रयोग करने से परहेज नहीं करते थे, आवश्यकता पड़ने पर संस्कृत भाषा के तत्सम शब्दों का प्रयोग करते थे और उर्दू के सामान्य बोलचाल के शब्दों का भी प्रयोग करते थे। जिससे उनकी कहानियां एक प्रभावशाली रूप ले लेती थी। उनकी भाषा में सरलता, सरसता और मधुरता दिखाई देती थी। इनका मुहावरे और लोकोक्तियां का प्रयोग विशेष प्रिय था। इन्होंने भावात्मक शैली विवेचनात्मक शैली व्यंग्यात्मक शैली का उपयोग किया।

5.2 भाषा का अर्थ स्वरूप एवं परिभाषाएं

मानव सामाजिक प्राणी है। समाज में रहने वाले सभी प्राणी को आपस में संवाद के लिए विचार—विनिमय करना पड़ता है। कभी वह शब्दों या वाक्यों द्वारा प्रकट करता है तो कभी सिर हिलाकर अपनी बात समझा देता है मनुष्य एक दूसरे से अपनी बात कहने के लिए साधारण भाषा का उपयोग करता है इसका उपयोग कभी—कभी समाज के उच्च और शिक्षित वर्ग में लोग अपने रिश्तेदारों को आमंत्रित करने के लिए निमंत्रण—पत्र छपवाते है तो देहात मैं अनपढ़ और निम्न वर्ग में आमंत्रित करने के लिए हल्दी, सुपारी या इलायची बांटना पर्याप्त समझा जाता है। रेलवे गार्ड और रेल—चालक का विचार—विनिमय लाल हरी झंडी दिखाकर करता है तो बिहारी के दोहे के अनुसार—"भरे भवन में करत है नैनन हूं ही सब बात", अर्थात भीड़ में नैनों से बात की जा सकती है। इसी तरह हाथ से संकेत, करतल—ध्वनि, आँख टेढ़ी करना, मारना या दबाना, खाँसना, मुँह बिचकाना, तथा गहरी साँस लेना, आदि अनेक प्रकार के साधनों से हमारे विचार—विनिमय का काम चलता है। अर्थात मनुष्य अपनी पाँचों ज्ञान—इन्द्रियों में से किसी के भी माध्यम से अपनी बात अथवा विचारों का विनिमय कर सकता है।

भाषा का अर्थ मानव के विचार—विनिमय के साथ—साथ चिंतन—मनन तथा विचार आदि का भी साधन माना जाता है। साधारणतः जिन ध्वनि—चिह्नों के माध्यम से मनुष्य परस्पर विचार—विनिमय करता है, उनकी समष्टि को भाषा कहते हैं। 'भाषा' शब्द संस्कृत की भाषा' धातु से बना है जिसका अर्थ है ''बोलना'' अथवा ''कहना''। अर्थात जिसे बोला जाए या जिसके द्वारा कुछ कहा जाए, वह भाषा है।

भाषा की परिभाषाएं

महर्षि पतंजलि ने 'महाभाष्य' में भाषा की परिभाषा इस प्रकार दी है, "व्यक्ता वाचि वर्णा येषा त इमे व्यक्तवाचः।"[21] अर्थात जो वाणी से व्यक्त हो उसे भाषा की संज्ञा दी जाती है।

डॉ. श्याम सुंदर दास के अनुसार, ''मनुष्य और मनुष्य के बीच वस्तुओं के विषय में अपनी इच्छा और मति का आदान—प्रदान करने के लिए व्यक्त ध्वनि—संकेतों का जो व्यवहार होता है, उसे भाषा कहते है।''[22]

पं. कामता प्रसाद गुरु ने अपनी पुस्तक 'हिंदी—व्याकरण' में भाषा को इस प्रकार परिभाषित किया है, "भाषा वह साधन है जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचार दूसरों पर भली—भाति प्रकट कर सकता है और दूसरों के विचार आप स्पष्टतया समझ सकते हैं।"[23]

डॉ. भोलानाथ तिवारी के अनुसार, "भाषा उच्चारणावयवों से उच्चरित अध्ययन विश्लेषणीय यादृच्छिक ध्वनि—प्रतीकों की वह व्यवस्था है, जिसके द्वारा एक समाज के लोग आपस में भावों और विचारों का आदान—प्रदान करते है।"[24]

सुमित्रानंदन पंत के शब्दों में, "भाषा संसार का नादमय चित्र है, ध्वनिमय स्वरूप है, यह विश्व की हृदय—तन्त्री की झंकार हैं, जिनके स्वर में अभिव्यक्ति पाती है।''[25]

काव्यादर्श के अनुसार, ''यह समस्त तीनों लोक अंधकारमय हो जाते, यदि शब्द रूपी ज्योति से यह संसार प्रदीप्त न होता।''[26]

सीताराम चतर्वुेदी के शब्दों में, ''भाषा के आविर्भाव से सारा मानव संसार गूँगो की विराट बस्ती बनने से बच गया।''[27]

प्रेमचंद के शब्दों में– "भाषा साधन है, साध्य नहीं, अब हमारी भाषा में वह रूप प्राप्त कर लिया है कि हम भाषा में आगे बढ़कर भाव की ओर ध्यान दें और इस पर विचार करें कि जिस उद्देश्य से यह निर्माण कार्य आरंभ किया गया था, वह क्यों कर पूरा हो। वही भाषा जिसमें आरंभ में "बागो बहार" और "बेताल पच्चीसी" की रचना ही सबसे बड़ी साहित्य सेवा थी अब इस योग्य हो गई कि उसमें शास्त्र और विज्ञान के प्रश्नों की विवेचना की जा सके"[28]

सुकुमार सेन के शब्दों में, ''अर्थवान कण्ठोदगीर्ण ध्वनि–समष्टि ही भाषा हैं।''[29]

पाश्चात्य भाषा शास्त्रियों द्वारा भी भाषा के संदर्भ में जो परिभाषाएं दी गई है, उनका निष्कर्ष भी यही है कि भाषा विचाराभिव्यक्ति का महत्वपूर्ण माध्यम है, जिसमें ध्वनियों का व्यवहार किया जाता है। इन सिद्धांतों के मतानुसार भाषा ध्वनि–संकेतों के द्वारा मानव–विचारों की अभिव्यक्ति है। पाश्चात्य विद्वानों की कुछ परिभाषाएं इस प्रकार हैं–

मेरिओ ए. पेई तथा फ्रैंक ग्यानोर के अनुसार, ''भाषा उन सार्थक और विश्लेषण समर्थ मानव उच्चारित ध्वनियों को कहते है, जिनका प्रयोग मानव विचारों और भावों को व्यक्त करने के लिये किया जाता है।''[30]

ए.ए. कार्डीनोर के मतानुसार, ''विचाराभि व्यक्ति हेतु व्यक्त ध्वनि संकेत ही भाषा है।''[31]

वेण्डी का मत है, ''भाषा एक प्रकार का चिन्ह है। चिन्ह से अभिप्राय उन प्रतीकों से है, जिनसे मनुष्य अपने विचार दूसरों पर प्रकट करता है।[32]

ब्लांख एवंट्रेगर के मतानुसार, ''भाषा ऐच्छिक वाक् प्रतीकों की वह व्यवस्था है जिसके द्वारा मनुष्य समुदाय परस्पर सहयोग करता है।''[33]

स्त्रुत्वा के अनुसार, ''भाषा यादृच्छिक भाषा प्रतीकों का तन्त्र है जिसके द्वारा एक सामाजिक समूह के सदस्य सहयोग एवं संपर्क करते हैं।''[34]

हम्बोल्ट के अनुसार, ''उच्चरित ध्वनि को भावाभिव्यक्ति के उपयोगी बनाने की चिरन्तन चेष्टा का फल है भाषा। यह श्रवणेन्द्रिय के पथ से मानव मन की अभिव्यक्त है।''[35]

स्वीट के अनुसार, ''ध्वन्यात्मक शब्दों द्वारा विचारों को प्रकट करना ही भाषा है।''[36]

प्लेटो ने सोफिस्ट में विचार और भाषा के सम्बन्ध में लिखते हुए कहा है, ''कि विचार और भाषा में थोड़ा ही अंतर है। विचार आत्मा की मूक या अध्वन्यात्मक बातचीत है और वही शब्द जब ध्वन्यात्मक होकर होठों पर प्रकट होती है तो उसे भाषा की संज्ञा देते हैं।''[37]

गुणे के अनुसार, ''ध्वन्यात्मक शब्दों द्वारा हृदयगत भावों तथा विचारों का प्रकटीकरण ही भाषा हैं।''[38]

भाषा ध्वनि चिह्नों की वह समष्टि हैं, जिनके माध्यम से एक व्यक्ति अपने विचार, इच्छाएँ तथा भाव दूसरे व्यक्ति के लिए व्यक्त करता हैं तथा दूसरे के विचार, इच्छाएँ और भाव ग्रहण करता हैं। किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व का दर्शन भाषा ही कराती हैं।

5.3 साधारण भाषा एवं साहित्यिक भाषा में अंतर

साधारण भाषा और साहित्य भाषा के बीच मुख्य अंतर यह है कि सामान्य भाषा लोगों के बीच भाषा है और लोग इसे आम रोजमर्रा की भाषा में उपयोग करते हैं।

जबकि साहित्यिक भाषा भाषा का अलंकृत रूप है जो अक्सर साहित्य को विशिष्ट बनाने की लिए उपयोग की जाती है

साधारण भाषा सामान्य जनता द्वारा दैनिक आधार पर उपयोग किए जाने वाली भाषा को संदर्भित करती है। इसकी श्रेणी भी है, जैसे औपचारिक उपयोगी अनौपचारिक उपयोगी आदि। भाषा का यह रूप व्याकरण के नियमों, व्यक्ति–विन्यास, शब्दावली और अभिव्यक्ति में साहित्यिक भाषा से अलग होता है। सामान्य भाषा में कहें तो साधारण भाषा व्याकरणिक रूप से गलत और सही की समझ से बाहर होती है। साहित्यिक भाषा, भाषा का अलंकृत रूप होता है, जैसे भाषण, लेख, उपन्यास, गीतों, कविताओं आदि में साहित्यिक भाषा होती है।

साहित्यिक भाषा, सामान्य भाषा से अपने शब्द विन्यास, ध्वनि विज्ञान, वाक्य विन्यास में भिन्न होती है और विशिष्ट व्याख्याता व्याख्यात्मक कठिनाइयों को प्रस्तुत कर सकते हैं।

5.4 यशपाल शर्मा एवं भीष्म साहनी की कहानियों में भाषा का स्वरूप

इनकी कहानियों की भाषा चरित्र की प्रकृति के प्रभाव से बनी होती थी यह अपनी कहानियों में किसी घटना और उसके वातावरण को बड़ी प्रभावशाली तरीके से दिखाते थे। साधारण भाषा को अभिव्यक्ति का कारण मानते थे इस कारण उनकी कहानियों की भाषा सरल और स्वाभाविक रूप से होती थी, यथा–

अंग्रेजी शब्द

रिटायरिंग रूम, रिजर्वेशन, नोडियर नो, एंट्रेंस कनस्तर वर्कशॉप

संस्कृत तत्सम शब्द

तरल– कंपन, शिलाखंड कंटकित, अंतर–दृष्टा चरण चिन्ह आत्म–विस्मृत

देशज शब्द

जन्म–मृत्यु, माया–बंधन, रोम–रोम, बाल–बच्चे, कलम–दवात, खींच–खांच, पढ़ाओ–वढ़ाओ

उर्दू शब्द

महकमे, तालीम, गिरवी, फाके

मुहावरे और लोकोक्ति

हाथ पैर सुन होना, शरीर में बिजली सी दौड़ गई, आग–बबूला होना, पानी पानी होना भीष्म साहनी को हिंदी उर्दू अंग्रेजी संस्कृत पंजाबी और कई देशज विदेशी भाषाओं का ज्ञान था जिसका प्रभाव उनके लेखन में भी दिखता है। उनके लेखन की विशेषता यही थी कि अपनी रचनाओं में छोटे–छोटे वाक्यों का प्रयोग करते थे जिसके माध्यम से आम व्यक्ति भी उनकी कहानियों की संवेदनशीलता को समझ सके–

अंग्रेजी शब्द

डियर, हाउ डू यू डू, इनकम, थरमस, डाउन, कार, स्कूटर, ड्राइंग, कलरफुल, कॉलेज स्कूल, क्लब, ट्रांसफॉमर्स, इंजीनियर, कॉमेडी, हॉस्टल, होटल, मैट्रिक, डॉक्टर, स्टार्ट, ट्रेन, कोर्ट आदि

देशज शब्द

देख–रेख, सज–धज, उबड़–खाबड़, उठता–बैठता, साफ–सुथरा, तितर–बितर, पढ़ाई–वढ़ाई, लाड–प्यार

उर्दू शब्द

इजाजत, दास्तान, मुजरिम, तहकीकात, भैरवी, हिफाजत, मुआवजा, दहशत, अखबार, निहायत, शिनाख्त, शख्स

तत्सम संस्कृत शब्द

अनंत, पतित, अवकाश, समर्पित, अवगति, कलेवर निर्धन,

मुहावरे और कहावतें

दांतो तले उंगली दबाना, पांव पर कुल्हाड़ी मारना, चैन की सांस लेना, चेहरा पीला पड़ना, पल्ला चि जाना, मुंह में आग देना,

5.5 निष्कर्ष

रचनाकार अपनी कृति में जो भी कुछ कहना चाहता है वह अपनी भाषा के माध्यम से कहता है, इसी माध्यम का सहारा लेकर पाठक रचनाकार के उद्देश्यों को समझ पाता है। साहित्य की रचना में भाषा का एक महत्वपूर्ण स्थान है अतः लेखक को अपनी भाषा का स्वरूप पाठकों के अनुरूप रखना होता है जिससे वह जुड़ सके। कहानी की भाषा जितनी सरल, भावपूर्ण और अविरल धारा की तरह होगी कहानी उतनी ही अधिक मनोरंजक एवं प्रभावी बन सकेगी।

यशपाल शर्मा और भीष्म साहनी दोनों की भाषा बहुत ही साधारण भाषा थी, दोनों ही लेखकों की कहानी में भाषा सरल सुबोध खड़ी बोली है पात्रों के अनुसार भाषा का प्रयोग कर लेखक ने भिन्न–भिन्न भाषाओं यथा– अंग्रेजी, पंजाबी, फारसी, अरबी एवं उर्दू पर अपने अधिकार को उद्धृत किया है। साथ ही साथ दोनों ही की रचनात्मक भाषा में उनके परिवेश एवं वातावरण का प्रभाव भी स्पष्टतया गोचर होता है।

छठा अध्याय

6.1 यशपाल शर्मा एवं भीष्म साहनी के कथा साहित्य में शिल्प

साहित्य में वस्तुतत्व के समान है जिसमें शिल्प का अपना महत्वपूर्ण स्थान होता है। कोई भी साहित्यिक कृति, वस्तु और विचार–तत्व की वाहि का होती है अर्थात साहित्यकार की संवेदना अनभुव तथा चिंतन को पाठकों तक प्रेषित करती है। बिना शिल्प के साहित्य का निर्माण नहीं किया जा सकता।

यशपाल शर्मा और भीष्म साहनी की कथा साहित्य में शिल्प उत्कृष्ट कोटि का है। यशपाल शर्मा हिंदी के अतिशय शक्तिशाली और प्राणमान साहित्यकार थे। उन्होंने अपना दृष्टिकोण बताने के लिए साहित्य को अपनाया था। इनकी साहित्य शिल्प इतनी मजबूत थी की इनके विचारों की अभिव्यक्ति इनके साहित्यिक क्षमता को कहीं भी क्षीण नहीं कर पाई। यशपाल की कथा साहित्य में शिल्प स्पष्ट व सशक्त है, इनका शिल्प विधान बहुत सुलझा हुआ था, इन्होंने प्रतीकात्मक या दोहरी भाषा का उपयोग नहीं किया अपितु, यथास्थान व्यंग्य, विनोद, तीखापन और स्पष्ट भाषा का प्रयोग किया। कहीं–कहीं वर्णनात्मक विचारात्मक शैली का प्रयोग भी यशपाल शर्मा जी ने किया।

दूसरी ओर साहनी जी के कथा साहित्य का शिल्प प्रेमचंद जी जैसा ही सीधा–साधा शिल्प है। प्रेमचंद जी की जैसे ही इन्होंने अपने भावों को अपनी भाषा पर हावी नहीं होने दिया। इनका शिल्प कभी सूक्ष्म और कभी बड़े आकार का होता है। उपेन्द्रनाथ अश्क ने भीष्म साहनी जी के लिए कहा है "भीष्म का शिल्प सीधा–साधा भाषा सरल और जिंदगी हमारी जानी पहचानी है।" भीष्म साहनी जी ने अपने साहित्य में शिल्प को ना ही आधुनिक रखा नहीं परंपरागत तरीके से रखा इनकी शिल्पगत विशेषताएं कथानक पात्र–परिकल्पना भाषा एवं शैली में देखा जा सकता है।

6.2 शिल्प क्या है और उसकी परिभाषाएँ

"शिल्प– संज्ञा पु.(सं) निर्माण सृजन सृष्टि रचना।"

शिल्प का अर्थ इस प्रकार है– "शिल्प गुण कलाकृति के विभिन्न अंगों की शिल्प शिल्पगत एकांतविति।" "शिल्प से अभि प्राय हाथ से कोई वस्तु तैयार करने अथवा हस्तकारी या कारीगरी से हैं।"

शिल्प क्या है– शिल्प का साहित्य में वस्तु तत्व की तरह अपना एक विशेष स्थान रखता है साहित्य की रचना करते समय साहित्यकार को शिल्प का सहारा लेना पड़ता है शिल्प के अंतर्गत इन सभी विधाओं नियमों तरीकों का समावेश होता है जिसकी सहायता से लेखक किसी घटना पात्र– वार्ता लाप दृश्य, वातावरण को सजीव रूप से वर्णित कर सकता है मानव जीवन के किसी विशिष्ट पहलू पर भी प्रकाश डाला जा सकता है साहित्यिक शिल्प जितना मजबूत होगा उस साहित्य का सौंदर्य उतना ही उत्तम होगा।

डॉ नगेन्द्र, 'मानवि की पारिभाषिक कोष' में लिखते हैं– ''शिल्प किसी कृति के निर्माण में उसके अवयवों एवं ब्योरों के कुशल संयोजन का प्रयास किया गया है। उसकी बुनावट में कारीगरी और बारीक युक्तियों से काम लिया गया है।''[39]

ओम शुक्ल जी के अनुसार, ''नाना प्रकार की विधियों, रीतियों और प्रक्रियाओं के समुच्चय को भी शिल्प–विधि माना गया है।''[40]

डॉ परमानन्द श्रीवास्तव अपनी पुस्तक 'हिंदी कहानी की रचनात्मक प्रक्रिया में लिखते हैं'– ''हम उनका ध्यान शिल्प के रचनात्मक पक्ष और उसकी रचनात्मक संभावनाओं की ओर दिलाते हुए, निवेदन करना चाहेंगे कि ''शिल्प'' एक रचनात्मक ''मूल्य'' है, यंत्र नहीं।''[41]

6.3 शिल्प संदर्भ में अन्य परिभाषाएं

शिल्प का शाब्दिक अर्थ है निर्माण करना किसी साहित्यिक कृति के संदर्भ में शिल्प का महत्वपूर्ण स्थान है हम यहां सिर्फ को छः भागों में वर्णित करेंगे

1) कथानक– वेब्सटर (थर्ड न्यू इंटरनेशनल डिक्शनरी) के अनुसार कथानक (प्लाट) की परिभाषा इस प्रकार है– "किसी साहित्यिक कृति (उपन्यास, नाटक, कहानी अथवा कविता) की ऐसी योजना, घटनाओं के पैटर्न अथवा मुख्य कथा को कथानक कहते हैं, जिसका निर्माण उद्दिश्ट प्रसगों की संयोजित श्रृंखला (स्तर क्रम) के क्रमिक उद्घाटन से किया गया हो।"

2) चरित्र चित्रण– "किसी कहानी के पात्रों का उनके चरित्र की विशेषता के आधार पर वर्णन करना चित्रण करना कहलाता है।"

3) संवाद– "दो या दो से अधिक लोगों के बीच होने वाले वार्तालाप या सम्भाषण को संवाद कहते हैं।"41 दूसरे शब्दों में कहे तो संवाद का सामान्य अर्थ बातचीत है। इसमें दो या दो से अधिक व्यक्ति भाग लेते है, अपने भावों और विचारों को व्यक्त करने के लिए संवाद की सहायता ली जाती है।

4) देश–काल– कहानी में किसी काल विशेष में देश या समाज की दशा

5) भाषा–शैली– वाक्य रचना का वह विशिष्ट प्रकार जो लेखक की भाषा संबंधी निजी विशेषताओं का सूचक होता है

6) उद्देश्य– "लक्ष्य वस्तु जिस पर ध्यान रखकर कोई बात कही या की जाय।"

6.4 तथ्य

एक ऐसी पद्धति और दृष्टिकोण जिसके माध्यम से मनुष्य सामाजिक परिवेश और उससे संबंधित विभिन्न तत्वों के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकता है इसके माध्यम से किसी भी सत्य को स्वीकार किया जा सकता है रानी जी ने ज्यादातर कहानियां पिछड़े वर्ग की विडंबना और समस्याओं पर लिखी है पिछड़ा वर्ग की भाषा अत्यंत सीधी–सादी होती है, भाषा में ना व्यंग होता है ना ही सौंदर्य–मूलकता

'गंगो का जाया' कहानी में गरबा मजदूर औरत की भाषा देखिए – "देखा है इस हालत में काम कौन देगा? जहां जाओ ठेकेदार पेट देखने लगता है।"

'चीफ की दावत' कहानी में अनपढ़ बूढ़ी मां की भाषा देखिए – "क्या साहब तेरी तरक्की कर देगा? क्या तेरी तरक्की होगी? क्या उसने कुछ कहा है? मेरी आंखें अब नहीं है बेटा जो फुलकारी बना सकें। तुम कहीं और सेबनवा लो बनी–बनाई ले लो।"

'ढोलक' कहानी में अनपढ़ चाची की भाषा में सरलता देखिए – "लो और सुनो–चाची हाथ पसार कर बोली–हम गाएं भी नहीं? हमारे घर में खुशी का दिन आया है, हम क्यों ना गाएं? गला फाड़–फाड़ कर गाएंगी। तू सुनना न चाहता हो तो अपने कमरे में जाकर बैठा रह।"

6.5 निष्कर्ष

कहानी में शिल्प भावनाओं को अभिव्यक्त करने का एक माध्यम है, इस प्रक्रिया से कहानीकार अपनी कहानी को, जिस प्रकार एक शिल्पी अपनी कृति को संवारता है, उसी प्रकार कहानीकार भी अपनी कहानी को अभिव्यंजित करता है। भावनाओं को व्यक्त करने का तरीका, कभी प्रतीकों या बिंबों अथवा संकेतों के माध्यम से, तो कभी कथानक को वर्णनात्मक रूप से प्रस्तुत करके किया जाता है।

शिल्प का महत्व मनोवेगों, भावों को स्पष्ट आकार देने में सहायक सिद्ध होता है। अच्छी शिल्प विधि वही है जो सही वस्तु को सही समय व सही परिप्रेक्ष्य में सही ढंग से प्रस्तुत करे।

भीष्म साहनी ने अपनी कहानियों में शिल्प को एक विशेष महत्व दिया है उनकी कहानियों का शिल्प सीधी सपाट रेखा पर दौड़ता हुआ प्रतीत होता है। उसके विपरीत यशपाल जी ने अपनी कहानियों में शिल्प को महत्व देते हुए कहानी के प्रवाह पर अधिक ध्यान केंद्रित किया है।

यशपाल ने अपने साहित्य के लिए विचार प्रतिपादन को महत्व दिया है। उन्होंने अपनी कहानियों में समस्याओं का बहुत समीपता से अध्ययन किया है, इसलिए उनकी कृतियों में उनके पात्रों का शिल्प विशिष्ट है। समय के परिवर्तन की गति के साथ उन्होंने आदर्शों के मानदंडों में अंतर आना स्वाभाविक माना है। जिस प्रकार व्यक्ति के जीवन जीने के तरीके से उसका अनुभव और ज्ञान बदलता रहता है उसी प्रकार उसकी विचारों की कल्पना शक्ति भी बदलती रहती है और इसका सीधा–सीधा प्रभाव लेखक के शिल्प का पड़ता है। इसी कारण यशपाल की कहानियों का शिल्प सरल और सुलझा हुआ है। शिल्प को संवेदना की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम माना है जिससे पाठक उस कहानी की संवेदना से जुड़ जाता है। किसी भी कहानी का आकर्षक शिल्प उसकी आत्मा होती है, साहित्य में शिल्प के महत्व प्रेमचंद ने कुछ विचार में लिखा है कि "साहित्य उसी रचना को कहेंगे जिसमें कुछ सच्चाई प्रकट की गई हो, जिसकी भाषा प्रौढ़ परिमार्जित और सुंदर हो और जिसमें दिल और दिमाग पर असर डालने का गुण हो और साहित्य में यह गुण पूर्ण रूप से उसी अवस्था में उत्पन्न होता है जब उसमें जीवन की सच्चाई अनुभूति या व्यक्त की गई हो"।

संदर्भ–ग्रंथ सूची

1. "दैनिक जागरण" – 3 दिसम्बर 2020
2. "संग्रहीत प्रति'' मूल से 29 सितंबर 2009 को पुरालेखित – अभिगमन तिथि 28 अक्टूबर 2009
3. "पृ. 115–120; महासमर–1 (बन्धन)", वाणी प्रकाशन, नई दि ल्ली}
4. "वेब्सटर (थर्ड न्यू इंटरनेशनल डिक्शनरी)"
5. "मेरी प्रिय कहानियाँ"– भीष्म साहनी– राजपाल प्रकाशन
6. "पटरियाँ" – भीष्म साहनी – राजकमल प्रकाशन
7. "महाभाष्य"– पतञ्जलि (21)
8. "हिंदी–व्याकरण" – पं. कामता प्रसाद गुरु(23)
9. "साहित्य का उद्देश्य पृष्ठ 2" – मुंशी प्रेमचंद (28)
10. "मानविकी पारिभाषिक कोश – पृ. 247" – संपा. डॉ. नगेन्द्र(39)
11. "हिन्दी उपन्यास की शिल्पविधि का विकास–पृ. 26" – ओम शुक्ल(40)
12. "हिन्दी कहानी की रचनात्मक प्रक्रिया P–2.33" – डॉ. परमानन्द श्रीवास्तव(41)

आलोचनात्मक ग्रंथ सूची

1. यादव राजेंद्र(1996) "कहानी अनुभव और अभिव्यक्ति " प्रकाशक– वाणी प्रकाशन 21ए दरियागंज, नई दिल्ली –110002 संस्करण प्रथम– 1996, द्वितीय– 2000 आवृत्ति – 2009 ISBN 81– 7055– 473
2. दुबे, डॉक्टर हरि शंकर(1997)" स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी गद्य में व्यंग संस्करण प्रथम 1997 प्रकाशक विकास प्रकाशन 311 सी विश्व बैंक बर्रा कानपुर 208027
3. मिश्र राम दरस(2007) हिंदी कहानी अंतरंग पहचान लेखिकाधीन संस्करण 2007 आवृत्ति 2014 ISBN 978–81 – 81 43 – 649– 8
4. पांडे, प्रो. गोविंद चंद्र, नगेंद्र, प्रो. शीतला प्रसाद, (2008) साहित्य और सामाजिक परिवर्तन, सा दम बद्रीनारायण ए. आर. मिश्रा प्रकाशक वाणी प्रकाशन 21। दरियागंज नई दिल्ली 110002 संस्करण प्रथम 1997 द्वितीय 2008 ISBN 81–7055–577–9
5. शाह डॉ. साधना(2010) "हिंदी कहानी : संरचना और संवेदना" प्रकाशक– वाणी प्रकाशन 21। दरियागंज, नई दिल्ली–110002 संस्करण प्रथम–2000, द्वितीय–2008
6. सोनवणे डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे,डॉ. सूर्यनारायण(2011) "कहानीकार अज्ञेय संदर्भ और प्रकृति" संस्करण द्वितीय–2011 ई. ISBN–818870–99–0
7. मिश्र राम दरस(2013) "आलोचना का आधुनिक बोध–संपादक– वाणी प्रकाशन–संस्करण– प्रथम–2013 ISBN – 978–93–5072–565–8
8. सिंह डॉ. सुधारी जी (2013) "कमलेश्वर जीवन यथार्थ के शिल्पी" प्रकाशन– वाणी प्रकाशन – 4695 21। दरियागंज, नई दिल्ली–110002 संस्करण–प्रथम 2013 ISBN 9935978–93–5072–523–8
9. यादव राजेंद्र(2013) "कहानी स्वरूप और संवेदना" संस्करण–1968–1988, 2000 आवृत्ति संस्करण–2013 ISBN –81–8870–90–0
10. लाल डॉ. लक्ष्मी नारायण(2014) "आधुनिक हिंदी कहानी" प्रकाशन– वाणी प्रकाशन 4695 21। दरियागंज, नई दिल्ली–110002 संस्करण – प्रथम 1989 द्वितीय 2001 आवृत्ति–2014
11. गुप्त, शंभू(2015) "कहानी की अंदरूनी सतह" प्रकाशन– वाणी प्रकाशन 4695 21। दरियागंज, नई दिल्ली– 110002 संस्करण – प्रथम 2015 ISBN–978–93–5072–990–8
12. उपाध्याय रमेश(2015) "जनवादी कहानी" प्रकाशन – वाणी प्रकाशन – 4695 21। दरियागंज, नई दिल्ली– 110002 संस्करण – प्रथम–2000 द्वितीय–2015 ISBN–978–93–5072–032–5

Jayoti Vidyapeeth Women's University
Estd. in 2008
''बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ''

13. कर्दभ डॉ. जयप्रकाश (2016) ओमप्रकाश वाल्मीकि व्यक्ति विचारक और सृजक" प्रकाशन – वाणी प्रकाशन – 4695 21 I दरियागंज, नई दिल्ली– 110002 संस्करण–प्रथम–2016 ISBN–978– 93–5229–426–8
14. गुप्त शंभू(2016) "कहानी यथार्थवाद से मुक्ति "संपादक– वाणी प्रकाशन– संस्करण–प्रथम–2016 ISBN –978–93–5229–314–8
15. बेचैन डॉ. श्योराज सिंह (2014) सामाजिक न्याय और दलित साहित्य प्रकाशक– वाणी प्रकाशन –4695 21 I दरियागंज, नई दिल्ली–110002 संस्करण–प्रथम–2014 ISBN– 978–93–5072–637–2
16. सिंह डॉ सुधा रानी(2013) "कमलेश्वर जीवन यथार्थ के शिल्पी" प्रकाशक– वाणी प्रकाशन – 4695 21 I दरियागंज, नई दिल्ली– 110002 संस्करण– प्रथम–2013 ISBN– 978–93–5072–523–8
17. भाग्य रेखा– राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली
18. निशाचर –राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली
19. पहला पाठ– राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली
20. भटकती राख– राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली
21. शोभा यात्रा– राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली
22. मैया दास की मारी– राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली
23. पाली– भीष्म कहानी
24. पटेरिया भीष्म साहनी
25. कड़ियाँ– भीष्म साहनी
26. बसंती भीष्म साहनी
27. भीष्म साहनी व्यक्तित्व एवं कृतित्व डॉ विनय प्रकाशन कानपुर
28. भाषा विज्ञान–डॉ. भोलानाथ तिवारी I प्रकाशक : किताब महल
29. यशपाल यशपाल के निबंध – खंड 2, लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद 1994
30. शर्मा, डॉ रामविलास शर्मा मार्क्सवाद और प्रगतिशील साहित्य–वाणी प्रकाशन नई दिल्ली 1994, 2008
31. अभिशप्त – यशपाल शर्मा
32. हिंदी कहानी एक अंतरंग– उपेंद्रनाथ अश्क
33. संस्कृति और साहित्य– डॉ रामविलास शर्मा
34. कहानीकार : भीष्म साहनी – डॉ. रीना पटेल
35. मनु भंडारी का कथा साहित्य : संवेदना और शिल्प श्रीमती सुषमा पाल
36. कहानी का रचना विधान– डॉ जगन्नाथ शर्मा
37. हिंदी कहानियों का विवेचन– ब्रह्मदत्त शर्मा
38. पिंजरे की उड़ान–यशपाल लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद
39. वह दुनिया–यशपाल लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद
40. तर्क का तूफान– यशपाल लोकभारती प्रकाशन
41. ज्ञानदान–यशपाल लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद
42. फूलों का कुर्ता– यशपाल लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद
43. धर्मयुद्ध– यशपाल लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद
44. उत्तराधिकारी– यशपाल लोक भारती प्रकाशन इलाहाबाद
45. यशपाल की कहानियों का वर्ष– चंद्रभानु सोनवाने पंचशील प्रकाशन जयपुर
46. यशपाल की कहानी कला–कुं अनु विग.अनभुव नेशनल पब्लिशिंग हाउस दिल्ली
47. आधुनिक हिंदी कहानी में वर्णित सामाजिक– ज्ञान चंद शर्मा राधा कृष्ण पब्लिकेशन हिंदी
48. हिंदी कहानियों के विधि का विकास– डॉ लक्ष्मीनारायण लाल

Jayoti Vidyapeeth Women's University
Estd. in 2008
''बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ''

49. हिंदी कथा साहित्य में भारत विभाजन डॉ हेमराज निर्मम संजय प्रकाशन दिल्ली
50. हिंदी कहानी के आंदोलन उपलब्धि और सीमाएं डॉ रजनीश कुमार नेशनल पब्लिशिग हाउस दिल्ली
51. आधुनिक हिंदी कहानी में प्रगति चेतना डॉ लक्ष्मण दत्त गौतम कुमार प्रकाशन दिल्ली
52. स्त्री देश की राजनीति से देश की राजनीति मृणाल पांडे राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली
53. भारतीय नारी दशा दिशा आशारानी व्होरा नेशनल पब्लिशिंग हाउस दिल्ली
54. भाषा और संवेदना रामस्वरूप चतुर्वेदी भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन वाराणसी
55. अपनी बात डॉ भीष्म साहनी वाणी प्रकाशन दिल्ली
56. यशपाल की कहानियों में नारी समस्या शेंडे शिवाजी विश्वविद्यालय
57. हिंदी कहानी में काम मूलक संवेदना–डॉ. रामबा महाजन
58. कवि कहानीकार संवेदना और दृष्टि–डॉ भरत सिंह
59. कहानीकार : भीष्म साहनी डॉ रीना पटेल
60. छठे दशक में हिंदी कहानी में जीवन मूल्य डॉ. अरुण गुप्ता

पत्र–पत्रिकाएं

1. सर्वनाम–त्रैमासिक
2. सुधार–त्रैमासिक
3. वसुधा–त्रैमासिक
4. प्रभाव माजरा(मधुमति)मासिक– पत्रिका
5. अर्थात– त्रैमासिक पत्रिका
6. तेवर–त्रैमासिक
7. आईना–त्रैमासिक
8. आधारशिला–त्रैमासिक
9. समकालीन मोहनपुरी साहित्य– कहानी विशेषांक
10. संभवा–त्रैमासिक
11. इस बार–त्रैमासिक
12. पत्रकार सदन–त्रैमासिक
13. प्रिय संपादक–त्रैमासिक
14. पहल–त्रैमासिक
15. परिचय–प्रवेशांक–अर्धवार्षिक
16. आधारशिला–त्रैमासिक
17. बोली बानी–मासिक
18. कंचन लता–प्रवेशांक–अर्धवार्षिक
19. मुक्ति पर्व–त्रैमासिक
20. परख–प्रवेशांक
21. समांतर–मासिक
22. सत्यशोधक–दलित विमर्श पत्रिका
23. दैनिक अंबर– दैनिक पत्रिका
24. राजस्थान पत्रिका– दैनिक पत्रिका
25. दैनिक भास्कर– दैनिक पत्रिका

शब्दकोश

हिंदी शब्दकोश–2000– डॉक्टर द्वारका प्रसाद – सहयोग श्रीमती संतोष प्रसाद

वृहत हिंदी शब्दकोश– संपादक कालिका प्रसाद, राजबल्लभ सहाय, मुकुंदी लाल श्रीवास्तव